रूपाली बोली

जयपुर शुक्रवार 14 मार्च 2003 वर्ष 7 अंक 13 पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 90 रूपये (नव डाक खर्च)

राज्यपाल द्वारा डॉ. तिवाडी महाराणा मेवाड सम्मान से पुरस्कृत

उदयपुर (का. प्र) अंतिम अवस्था के कैन्सर से ग्रस्त होकर मौत के कगार तक जा पहुंचे डॉ. नन्दलाल तिवाडी को राजस्थान के राज्यपाल महामहिम अंशुमान सिंह ने महाराणा मेवाड फाउण्डेशन पुरस्कार 2003 से सम्मानित किया है।

कई वर्षों के अनुसंधान के बाद असाध्य कैन्सर की कारगर आयुर्वेदिक औषधि तैयार करने में सफल हुए 64 वर्षीय डॉ. तिवाडी को स्थानीय सीटी पैलेस प्रांगण में 9 मार्च को आयोजित गरिमामय समारोह में श्री सिंह ने प्रतिष्ठित महाराणा मेवाड सम्मान से अलंकृत किया। इस अवसर पर समारोह में मौजूद ऐसे रोगियों की आंखों में आंसू झलक पडे जो डॉ. तिवाडी की औषधि से कैन्सर मुक्त हो चुके है।

उल्लेखनीय है कि 1981–82 में स्थापित इस अलंकरण से अब तक 26 विशिष्ट व्यक्तियों को अलंकृत किया जा चुका है।

नागौर जिले के नीमडी गांव में जन्में और वर्तमान में जयपुर में रह रहे वैद्य श्री नन्दलालजी तिवाडी ने कैन्सर के उपचार के संबंध में उल्लेखनीय अनुसंधान कर विश्व में भारत व आयुर्वेद का नाम रोशन किया है। उन्हें कई वर्षों की कडी साधना के बाद आठ जडी बूटियों का ऐसा मिश्रण (यौगिक) तैयार करने में सफलता मिली है जो कैन्सर का उपचार करने में कारगर सिद्ध हो रहा है। कर्कटॉल नामक इस आयुर्वेदिक यौगिक के माध्यम से श्री तिवाडी विगत 20 वर्षों में सैकडों रोगियों को कैन्सर से मुक्त कर नया जीवन दे चुके है।

कर्कटॉल औषधि का सेवन कर कुछ ही माह में और अधिकतम डेढ–दो वर्षों के भीतर पूरी तरह निरोग हुए कैन्सर रोगियों का रिकार्ड श्री तिवाडी के पास सुरक्षित है। कैन्सर के उपचार में श्री तिवाडी की सफलता से प्रेरित होकर देश–विदेश के प्रतिष्ठित कैन्सर अस्पतालों (द रॉयल मार्सडेन हॉस्पीटल लन्दन एण्ड यू. के., द ईगलसेलिफ मेडिकल प्रेक्टिसा, क्लीवलेण्ड यू. एस. ए., सैन्ट थॉमस हॉस्पीटल लन्दन यू. के. टाटा मेमोरियल कैन्सर हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर मुम्बई आदि) ने भी ईलाज के लिए रोगियों को श्री तिवाडी के पास भेजें है।

उपलब्ध दस्तावेजों के अनुसार श्री तिवाडी के उपचार से अनेक डॉक्टरों व उनके निकट संबन्धियों को भी कैन्सर से मुक्ति पाने में सफलता मिली है। श्री तिवाडी को अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, ज़र्मनी, आस्ट्रेलिया, कनाडा, स्वीडन, स्विटजरलेण्ड, दक्षिण अफ्रीका, बैल्जियम, नेपाल, दुबई, बहरीन, केनिया, सिंगापुर आदि अनेक देशों में कैन्सर रोगियों के ईलाज के लिए बुलाया जा चुका है। उन्हें महाराष्ट्र, बंगाल, बिहार, उडीसा, उत्तर प्रदेश, तमिलनाडू केरल, कर्नाटक, गुजरात, हिमाचल, हरियाणा, पंजाब, मध्यप्रदेश, दिल्ली आदि कई राज्यों के कैन्सर रोगियों के उपचार में सफलता मिली है। देश विदेश की अनेक पत्र–पत्रिकाओं में श्री तिवाडी की उल्लेखनीय सफलता की कहानियां प्रकाशित हो चुकी है।

श्री तिवाडी अपनी खोज कर्कटॉल और उसके उपचार परिणामों से विश्व स्वास्थ्य संगठन प्रधानमंत्री कार्यालय केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय भारत सरकार के वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान विभाग इंग वन्द्रोत्तर ऑफ इण्डिया केन्द्रीय औषधि अनुसंधान संस्थान लखनऊ केन्द्रीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद (आई. सी. एम. आर) सैन्ट्रल कौन्सिल ऑफ आयुर्वेद (सिद्धा), टाटा मैमोरियल हास्पीटल आदि को अवगत करा चुके है।

गैर व्यवसायिक आधार पर कार्यरत श्री तिवाडी लम्बे अर्से से सेवाभाव से कैन्सर रोगियों को जीवन दान देने का पुण्य कार्य कर रहे है। उनके जीवन का उत्तरार्द्ध इसी कार्य को समर्पित हो गया है।

उल्लेखनीय है कि डॉ नन्दलालजी तिवाडी को अखिल राजस्थान सर्व ब्राह्मण महासभा द्वारा आयोजित समारोह में गत दो सितम्बर 2001 को ततकालीन कार्मिक मंत्री डॉ. बी. डी कल्ला द्वारा ब्राह्मण रत्न 2001 से अलंकृत किया जा चुका है।

वही आयुर्वेद प्रगति संघ महाराष्ट्र द्वारा आयोजित समारोह में महाराष्ट्र के ततकालीन गृहमंत्री श्री कृपाशंकर सिंह द्वारा कैन्सर की चिकित्सा से हजारो रोगियों को जीवनदान देने पर धन्वन्तरी सम्मान 2002 से अलंकृत किया जा चुका है।

कैन्सर जैसे असाध्य रोग से हजारों व्यक्तियों को जीवनदान दे चुके ऐसे विशिष्ट व्यक्ति के उज्ज्वल भविष्य हेतु रूपाली बोली परिवार शुभकामनाऐं प्रेषित करता है।

राजस्थान के राज्यपाल महामहिम अशुमान सिंह डॉ नन्दलालजी तिवाडी को सम्मानित करते हुए